D-I

Short Notes on Raga Puriya.

- इस राग की उत्पत्ति मारवा थाट से मानी गई है।
- इसमें पंचम वर्ज्य होने से इसकि जाति षाडव है।
- इसका ~~वादि~~ वादी स्वर गंधार है।
- इसका संवादी स्वर निषाद है।
- इसका गायन समय 4 बजे से 7 बजे तक है।
- आरोह - सा, नि॒ रे ग मे ध नि॒ रें सां
  अवरोह - रें नि॒, मे ध ग मे ग रे सा
  पकड़ :- ग मे ध ग मे ग, मे रे ग, रे सा, नि॒ ध नि॒ ऽ रे सा
- प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में इस राग का कोई उल्लेख नहीं मिलता है। अत: बहार के समान इसे भी आधुनिक राग कहा जा सकता है।
- पूरिया गाते समय तानपूरे के प्रथम तार को मंद्र निषाद से मिलाया जाता है।
- इस राग की प्रकृति गंभीर है।
- इसमें गमक, कण और मींड का काम प्रचुरता से होता है।
- यह संधिप्रकाश और प्रभेद प्रवेशक राग दोनों है।